

आनन्द निकेतन बैंक रोज़ के गणित का विस्तार

अनिल सिंह

बच्चे अक्सर उन चीज़ों को लेकर उत्सुक और उत्साही होते हैं जो बड़ों के लिए तो उपलब्ध हैं लेकिन उन्हें अभी उसके लिए इन्तज़ार करने को कहा जाता है। यह सब उनके आसपास व्याप्त है, वे सबकुछ देख और समझ रहे होते हैं लेकिन उन्हें इसका अभ्यास करने का, इसे किसी तरह जी लेने का मौका दिया ही नहीं जाता।

अर्थपूर्ण गणित शिक्षण

गणित शिक्षण के लिए हमारे पास मॉन्टेसरी किट के अलावा एकलव्य की प्लेस वैल्यू किट, डाइस, नम्बर कार्ड, रंगोमेट्री और गिनमाला थे। बच्चे इनके साथ जुड़ाव भी महसूस कर रहे थे और सीख भी रहे थे लेकिन हम फिर भी कुछ ऐसी चीज़ों की तलाश में थे जो बच्चों को ज़्यादा अर्थपूर्ण, व्यावहारिक और वास्तविक लगें। क्योंकि ये सारी चीज़ें अपने स्वभाव में खेल और ठोस होने के बावजूद गणित सिखाने का एक औपचारिक माहौल ही बनाती थीं। हम इसे तोड़ना चाहते थे।

अगले चरण में हम बाज़ार से

प्रिंटेड नोट लेकर आए। इनमें एक रुपए से लेकर 500 तक के नोट थे जो बाहर भी चलन में थे। बच्चे किसी-न-किसी बहाने इनसे 'दो-चार' होते ही थे। पर कुछ ही दिनों में बच्चों की रुचि इनमें खत्म हो गई। इनका आकर्षण भी गणित सिखाने की भेंट चढ़ गया। फिर हमने सोचा, क्यों न आनन्द निकेतन के खुद के नोट छापे जाएँ। हमने वैसा ही किया। हमने अलग-अलग रंग की पेपर शीट में साइज़ का फरक रखते हुए और उन्हें डिज़ाइन करके नोट छापे। उस पर लिखा गया - आनन्द निकेतन बैंक से जारी।

आगे से यही नोट बच्चों की गणित कक्षा में सीखने-सिखाने के लिए धड़ल्ले से इस्तेमाल होने लगे। बच्चे इनसे ज़्यादा लगाव और जीवन्त जुड़ाव अनुभव कर पा रहे थे। हमारे गणित शिक्षक अंकित ने न्यूमरेसी और लॉजिक वाले कमरे में ये सारे नोट एक डिब्बे में रखे हुए थे। वो एक्टिविटी के लिए निकाले जाते और फिर वापस उसमें रख दिए जाते। संख्या बनाना, आपस में लेना-देना, जोड़ना-घटाना और बराबर का

बैटवारा जैसे काम इन नोटों के माध्यम से किए जाते। एक बार छह साल की माही ने इन नोटों को घर ले जाने की मांग रखी। उसकी देखा-देखी और बच्चे भी नोट घर ले जाने की इजाजत चाह रहे थे। अंकित ने नोट गिनकर उन्हें दे दिए और एक रजिस्टर में उनके नाम की एंट्री कर दी। साथ ही, अगले दिन नोट वापस लेकर आने के लिए भी कहा।

बच्चों के हाथ में खुद का पैसा

उस दिन शाम को फीडबैक मीटिंग में जब अंकित ने यह बात साझा की तो हमें लगा कि कुछ और योजना बनाई जानी चाहिए जिससे कि बच्चों के पास ये नोट उनकी अपनी सम्पत्ति की तरह रह पाएँ और

वे इसका वास्तविक जैसा कुछ इस्तेमाल भी कर पाएँ। अंकित ने यह भी बताया कि बच्चे इन नोटों से कुछ खरीदना चाहते थे। प्रमोद ने सुझाव रखा कि बच्चों को अपने काम के लिए जो कागज़, पेंसिल या रबर चाहिए होते हैं, वे इन नोटों से खरीद सकते हैं। ऐसे में उन्हें रुपयों के मान, चीज़ों की कीमत, लेन-देन की वास्तविकता और क्रय-शक्ति का ज़्यादा जीवन्त अनुभव हो सकेगा। हम सभी को यह सुझाव बढ़िया लगा।

बच्चों के साथ मासिक बैठक में इस मुद्दे पर बातचीत की गई। उन्हें यह आइडिया अच्छा लगा। बच्चों के साथ मिलकर कागज़, पेंसिल और रबर की कीमतें तय की गईं।



बच्चों के प्रस्ताव पर शुरुआत के लिए सबकी कीमतें एक रुपए रखी गईं। हर बार एक कागज़ या एक पेंसिल का एक रुपया देने की बजाए यह तय हुआ कि एक सप्ताह का हिसाब लिखकर रखा जाए और जिसने जितने कागज़, पेंसिल और रबर स्कूल से खरीदे, उन सबकी कीमत जोड़कर सप्ताह के अन्त में उस बच्चे से उतने रुपए ले लिए जाएँ। अब ऐसे में यह भी ज़रूरी था कि रुपए बच्चों के पास रहें ताकि वे उससे भुगतान कर सकें। अंकित ने सुझाया कि बच्चों को एक मुश्त राशि दे दी जाए जिसे वे अपने पास रखें। वे सप्ताहभर उससे स्टेशनरी की खरीददारी करें और फिर सप्ताह के आखिरी में उसका हिसाब करके, स्कूल को भुगतान कर दें। यह आइडिया सबको जमा और इस व्यवस्था को चालू कर दिया गया।

आनन्द निकेतन बैंक

बच्चों के अपने कबर्ड थे। वे उसमें अपने बैग, टिफिन, कॉपी-किताब और सारे रुपए रखते थे। ज़रूरत पड़ने पर रुपए निकालकर भुगतान करते और बाकी रुपए उसी में रखे रहने देते। धीरे-धीरे कुछ बच्चों के रुपए गुम होने के मामले सामने आए। फिर चोरी होने के मामले भी आए। अब यह एक नई दुनियावी समस्या थी। तो इसका हल भी दुनियावी ढंग से ही निकाला जाना ठीक लगा। एक

बड़ी बच्ची अनिसा ने मीटिंग में सुझाव दिया कि बैंक में रुपए सुरक्षित रहते हैं, तो क्या स्कूल का भी एक बैंक हो सकता है जिसमें सब लोग अपने रुपए रखें और ज़रूरत पड़ने पर निकाल सकें। इस बात ने एक नया ही रास्ता खोल दिया था। अब हमें बच्चों को वास्तविक अनुभव देने के लिए एक और चीज़ मिल गई थी।

इस तरह उस मीटिंग में ही ‘आनन्द निकेतन बैंक’ का प्रस्ताव फाइनल हो गया। फिर उसका एक औपचारिक ढाँचा बनाने पर बात हुई। शुरुआत में ऑफिस की टेबल पर प्लास्टिक के कई सारे डिब्बों में अलग-अलग नोट रखकर बैंक की शुरुआत हुई। एक रजिस्टर रखा गया जिसमें सभी बच्चों के लिए अलग-अलग पेज रखे गए। एक पेज में एक-एक बच्चे के लेन-देन का ब्यौरा रखना तय हुआ। बच्चों ने कबर्ड से अपने-अपने नोट लाकर बैंक में जमा कर दिए। अंकित ने बैंक की ज़िम्मेदारी सम्भाली और सप्ताह में एक दिन लंच के बाद बैंक खोलकर, एक घण्टे कामकाज करना तय हुआ।

एक दिन अबीर ने पूछा कि बैंक में उसके कितने रुपए जमा हैं। अंकित ने कहा, “परसों बैंक का दिन है तो उसी दिन रजिस्टर में देखकर बताऊँगा।” अबीर ने कहा कि “मुझे आज बहुत सारा सामान खरीदना है, मुझे अभी रजिस्टर देखकर बताओ कि मेरे कितने रुपए बचे हैं।” अंकित

Anand Niketan Bank

A School bank



Pass Book

Name of Account holder ----- Group -----
Mother's Name ----- Father's Name -----
Date of Birth ----- Account No. -----

ने रजिस्टर में अबीर के नाम का पेज खोला और उसके बचे हुए रुपए की जानकारी दे दी। शाम को फीडबैक मीटिंग में जब अंकित ने यह बात साझा की तो हमें लगा कि बच्चों को मालूम ही होना चाहिए कि उनके पास कितने रुपए हैं। और यहाँ से पासबुक के खयाल ने जन्म लिया। यह एक और वास्तविक और दुनियावी चीज़ होने वाली थी जो बच्चों के आकर्षण का केन्द्र बन सकती थी। और उनके अनुभव में एक नयापन जोड़ सकती थी।

बच्चों की मीटिंग में पासबुक का प्रस्ताव रखा गया। बच्चों को तो मज़ा ही आ गया। उनके हाथ में उनकी अपनी पासबुक होने वाली थी, जैसे बड़ों के पास होती है। वे उसमें देख सकते थे कि बैंक में उनके कितने पैसे जमा हैं। हर सप्ताह अपने लेन-

देन को उसमें अपडेट करा सकते थे। कम्प्यूटर पर पासबुक की एक डिज़ाइन बनाई गई। उसके कवर पर 'आनन्द निकेतन बैंक' लिखा था और साथ ही उसका लोगो भी था, जो दरअसल स्कूल का ही लोगो था। ऊपर खाताधारक का नाम, उसके समूह का नाम, और खाता नम्बर लिखा गया था। अन्दर एण्ट्री करने के लिए कॉलम बने थे। हर एण्ट्री के बाद अन्तिम कॉलम में खाताधारक के हस्ताक्षर की जगह थी जो इस बात की पुष्टि के लिए था कि उसके सामने हिसाब-किताब लिखा गया है। सबको पासबुक बाँटी गई। बच्चों ने उसे अपने-अपने हिसाब से कागज़ के लिफाफे और बैग बनाकर सुरक्षित रखा। इस तरह अस्थायी बैंक और पासबुक के साथ कामकाज चलने लगा।

बैंक मैनेजर की नियुक्ति

एक दिन एक सुझाव आया कि बैंक मैनेजर भी होना चाहिए। अंकित जो अभी तक बैंक की ज़िम्मेदारी देख रहे थे, ने कहा, “यह अच्छा होगा कि बड़े बच्चों के समूह में से एक बैंक मैनेजर चुना जाए और उसे ज़िम्मेदारी सौंपी जाए।” प्रस्ताव रखते ही कई बच्चे इस काम के लिए अपना नाम देने लगे। फिर तय हुआ कि बैंक मैनेजर के लिए एक छोटी-सी परीक्षा रखी जाए और योग्य उम्मीदवार को बैंक मैनेजर नियुक्त किया जाए। यह प्रस्ताव बड़े बच्चों के समूह को जमा। एक दिन तय करके परीक्षा ली गई। ‘डीयर’ ग्रुप की भूमिका ने टेस्ट क्वालिफाई किया और उसे ‘आनन्द

निकेतन बैंक’ के मैनेजर के पद के लिए नियुक्ति पत्र दिया गया। अगले सप्ताह से उसने कामकाज सम्भाल लिया।

अगली मीटिंग में भूमिका ने सुझाया कि एक बार सभी से रुपए वापस ले लिए जाएँ और फिर से बाँटे जाएँ ताकि सबके पास बराबर-बराबर नोट रहें। इस बीच हमने और नोट प्रिन्ट कर लिए थे। हमारा आकलन था कि सबसे ज़्यादा छोटे नोट मतलब एक, दो, पाँच और दस के होने चाहिए। उसके बाद बीस, पचास और सौ के नोट हों। पाँच सौ और हजार के ज़्यादा नोट होने की ज़रूरत नहीं है। इस तरह हम एक राशि पर पहुँचे, और वह थी 3260



रुपए प्रति बच्चा। सभी बच्चों को यह राशि दे दी गई। बच्चों ने कुछ रुपए बैंक में जमा कर दिए और कुछ रुपए हाथ में रखे ताकि वो सप्ताहभर लेन-देन कर सकें।

एक छोटी टेबल पर गत्तों की मदद से बैंक का काउण्टर बनाया गया। फिर बड़े-बड़े अक्षरों में 'आनन्द निकेतन बैंक' लिखकर, उसका प्रिंट निकाला गया और काउण्टर पर चिपका दिया गया। हर शुक्रवार को लंच के बाद भूमिका बैंक काउण्टर के सामने



कुर्सी लगाकर बैठ जाती और बच्चे अपनी-अपनी पासबुक लेकर लाइन में लग जाते और बैंक का कामकाज निपटाते। ठीक वैसे ही जैसे बड़े करते हैं। अब कोई बच्चा शुक्रवार को स्कूल से छुट्टी न मारता।

एक बार प्रार्थना की पासबुक खो गई थी। उसने घर में मम्मी-पापा को यह बात बताई। उस महीने की पैरेंट्स मीटिंग में उसकी मम्मी ने हमसे साझा किया कि प्रार्थना बहुत परेशान है क्योंकि उसकी पासबुक गुम गई है। अगले दिन हमने उससे

बैंक मैनेजर के नाम एक चिट्ठी लिखवाई और फिर उसे डुप्लिकेट पासबुक बनाकर दी गई।

दो-तीन सप्ताह बाद भूमिका की तरफ से यह माँग आई कि उसे इस काम के लिए कोई सैलरी भी दी जाए। यह भी ठीक रहा। दो हज़ार रुपए प्रति माह के हिसाब से उसकी सैलरी तय की गई। 'बैंक मैनेजर - आनन्द निकेतन बैंक' नाम की एक स्टैम्प भी बनवाई गई। साथ ही, यह भी तय हुआ कि बैंक मैनेजर की ज़िम्मेदारी हर छह महीने में बदली

जाए, ताकि अन्य बच्चों को भी यह मौका मिल सके।

सभी बच्चों के खाते थे। सभी अपनी पासबुक रखते थे। अंकित की मदद से भूमिका ने ब्याज जोड़ने के लिए भी एक फॉर्मूला बनाया जिससे बच्चों को ब्याज जैसी चीज़ के बारे में भी मालुमात हो और उनके रुपए भी थोड़े बढ़ सकें। पर यह ब्याज वाला फॉर्मूला ज़्यादा चला नहीं।

पूंजी से कारोबार की शुरुआत

अब अगला चरण था, इन रुपयों को पूंजी की तरह इस्तेमाल करके, कमाई करने के भी कुछ रास्ते जोड़े जाएँ ताकि रुपयों को बढ़ाने और उनको और ज़्यादा चलन में लाने के रास्ते खुलें। बच्चों को दुनियावी गणित

और दुनियावी कार्य-व्यापार के अनुभव के कुछ मौके मिल सकें।

और इस तरह जन्मा साप्ताहिक बाज़ार और दुकानों का आइडिया। दुकान के लिए जगह खरीदने या जगह के मालिक से दुकान किराए पर लेने का आइडिया, अकेले या पार्टनरशिप में अपना उपक्रम शुरू करने का आइडिया, स्कूल से कच्चा माल खरीदकर नए उत्पाद बनाकर बेचने का आइडिया, चीज़ों की कीमत तय करने का गणित लगाना, मुनाफा कमाने का आइडिया। अब बैंक के साथ-साथ साप्ताहिक बाज़ार भी शुरू होने वाला था।

अगला किस्सा इन्हीं साप्ताहिक बाज़ारों और इसकी रंग-बिरंगी दुनिया के बारे में होगा।

अनिल सिंह: पिछले 25 वर्षों से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। विगत डेढ़ दशक से प्राथमिक शिक्षा उनका प्रमुख कार्य रहा है। भोपाल के आनंद निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल की संकल्पना के दिनों से वे जुड़े रहे और उसका संचालन किया। वर्तमान में, टाटा ट्रस्ट के पराग इनिशिएटिव से जुड़कर बाल साहित्य और पुस्तकालय संवर्धन का काम कर रहे हैं।

सभी फोटो: अनिल सिंह।